यूनिट-प्रथम

कार्य एवं शिक्षा

Unit-I

WORK AND EDUCATION

कार्य का अर्थ एवं अवधारणा, कार्य एवं जीविका, कार्य प्रशंसा एवं संतुष्टि तथा कार्य शिक्षा

[Meaning and Concept of Work, Work and Livelihood, Work with Happiness and Satisfaction and Work Education]

कार्य का अर्थ एवं अवधारणा
(Meaning and Concept of Work)

आधुनिक युग में शिक्षा को रोजगार से जोड़कर देखा जाता है। यदि शिक्षित व्यक्ति सरकारी नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता तो ही वह किसी व्यवसाय की ओर उन्मुख होता है या फिर प्राईवेट (निजी) संस्थानों में भाग्य आजमाता है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के माध्यम से क्रांतिकारी बदलाव लाने पर जोर दिया है। उनका मानना था कि दिमाग को हाथों के जरिए शिक्षित किया जाना चाहिए। आज की शिक्षा किताबी ज्ञान प्रदान करती है। किताबी ज्ञान किसी भी बालक की पाँचों इन्द्रियों को विकसित करने में सक्षम नहीं है। यह शिक्षा बालक को भ्रम तथा सामाजिकता से दूर कर रही है। आज हम ऐसे कई मामले देखते हैं, जिनमें माता-पिता यह शिकायत करते हैं कि स्कूल के बाद उनके बच्चे उनके साथ खेतों में काम करने से इन्कार करते हैं। हमारे अधिकांश गाँवों में कई माता-पिता स्कूल में पढ़ने वाले बालकों से खेतों में काम की उपेक्षा नहीं करते हैं। आज के विद्यालय भी कार्य और शिक्षा के बीच अंतर को बढ़ा रहे हैं। कार्य करने से बालक को न केवल व्यापक जानकारी मिलती है, अपितु ऐसी परिस्थितियाँ मिलती हैं जहाँ वे बहुत सीखते हैं, अपनी शंकाओं का समाधान करते हैं और अपनी जिज्ञासाओं को शांत करते हैं। आज विश्व में कार्य और शिक्षा के विचार को विभिन्न योजनाओं के जरिए प्रयोग में लाया जा रहा है। शिक्षा में 'कार्य से जुड़ी शिक्षा' की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। अधिकांश ग्रामीण और शहरी परिवारों में वयस्क लोग बच्चों से घरेलू कार्यो में मदद मांगते हैं तथा अभिभावकों की मदद करने को उनका सामाजिक कर्त्तव्य माना जाता है। 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को सार्वभौमिक शिक्षा दिये जाने से संबंधित किसी भी बहस में विभिन्न समुदायों में घरों व स्कूलों को प्रभावित करने वाली स्थानीय स्थितियों जैसे परंपरागत व्यवसाय, लैंगिक भूमिकाओं को ध्यान में रखना जरूरी है। जब तक कार्य और शिक्षा को अलग-अलग देखा जायेगा तब तक ये समस्यायें बनी रहेंगी। बाल मजदूरों, स्कूल से बाहर निकाले गए या खुद स्कूल छोड़ने वाले बच्चों तथा स्कूल के साथ घर की जिम्मेदारियाँ निभाने में सक्षम बच्चों के उदाहरण मिल जायेंगे। हमारे परिवेश में काम के बिना बचपन स्वीकार नहीं है। वस्तुतः बचपन सामाजिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है, कोई तैयारी करने का पड़ाव नहीं है। बच्चों के सीखने-अनुभव करने को बच्चों, अभिभावकों एवं राज्य के दरम्यान मौजूद जटिल राजनीतिक तनाव के रूप में समझा जाना चाहिए। कमजोर वर्गों के बालकों को कार्य करने से जो ज्ञान, मूल्य और कौशल प्राप्त होते हैं, वे उन्हें इन अवसरों से वंचित बालकों से आगे ले जाते हैं। शिक्षा के योजनाकारों के समक्ष यह चुनौती होगी कि वे कमजोर तबके के बच्चों को गरिमा, आत्मविश्वास और शक्ति के साथ स्कूल में भाग लेने में सक्षम बनाते हुए उनकी इस प्रायोगिक पृष्ठभूमि को उनके फायदे में बदल दें। कार्य को पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में पेश करके, सामुदायिक संसाधनों के उपयोग से शिक्षा को सार्थक बनाने के साथ-साथ बालकों को ऐसे ज्ञान एवं कौशल से युक्त करना संभव हो जाएगा, जो उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने अथवा रोजगार पाने में मदद करेंगे।

Scanned by CamScanner

कोठारी आयोग (1964-66) में कहा गया था कि हर बेहतर और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के कम से कम चार बुनियादी तत्व होते हैं—

(i) 'साक्षरता' यानि कि भाषाओं का अध्ययन, मानविकी और सामाजिक विज्ञान का अध्ययन।
(ii) 'संख्यात्मकता' यानि गणित और प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन।
(iii) कार्य का अनुभव।
(iv) सामाजिक अनुभव।

इस प्रकार कोठारी कमीशन का स्पष्ट कहना है कि कार्य अनुभव...शिक्षा और कौशल को एकीकृत करने का एक तरीका है। यह युवाओं को रोजगार प्राप्त करने में सहायक हो सकती है, यह छात्रों में उत्पादक प्रक्रियाओं और विज्ञान के इस्तेमाल में अंतःदृष्टि विकसित करने और कठिन एवं जिम्मेदारी वाले कार्य की आदत पैदा करता है। ऐसा करके छात्र राष्ट्रीय उत्पादकता को बढ़ाने में योगदान दे सकते हैं और इस प्रकार व्यक्ति और समुदाय के बीच संबंध मजबूत हो सकता है। साथ ही कार्य अनुभव शिक्षित व्यक्तियों और आम जनता के बीच संबंध बनाकर सामाजिक और राष्ट्रीय एकीकरण में मद्द कर सकता है।

वर्ष 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 'काम की शैक्षिक भूमिका' के बारे में बात करने के बजाए छात्रों के 'कार्यबल में प्रवेश' पर जोर देती है। इसमें व्यावसायिक शिक्षा के पूर्व के पाठ्यक्रम पर अधिक बल दिया गया है। यहाँ 'कार्य अनुभव' केवल व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के निर्माण के लिए ही है। यह श्रम कार्य-शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को समानता देने की व्यापक प्रवृत्ति की वजह से है।

कार्य शिक्षा का अर्थ
(Meaning of Work Education)

कार्य + शिक्षा, शिक्षा की एक विधि है, जिसमें कक्षा में शिक्षा देने के साथ-साथ विद्यार्थियों के समाजोपयोगी कार्यों की व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

दूसरे शब्दों में, कार्य शिक्षा वह उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक श्रम माना गया है, जो शिक्षा के अन्तरंग भाग के रूप में आयोजित किया जाता है। यह अर्थपूर्ण सामग्री के उत्पादन और समुदाय की सेवा के रूप में परिकल्पित होता है। कार्य-केन्द्रित शिक्षा को चलाने में अध्यापकों की भूमिका को निम्न प्रकार के माध्यम से समझा जा सकता है—

(1) बालकों के लिए ऐसे कार्य को चुनें जो बच्चे की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति का हिस्सा हो। कार्य का चयन करते समय संसाधनों की उपलब्धता और बालकों के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखें।
(2) कार्य करने के लिए सामग्री और संसाधन जुटाएं।
(3) बच्चों के साथ उनके कार्यों में शामिल हों।
(4) अध्यापकों को कुछ कार्यक्षमताओं की सूची बनानी चाहिए, जिसमें बच्चों के सामाजिक गुण, शैक्षणिक गुण या भावात्मक गुण शामिल हो सकते हैं। इन्हें बच्चों के मूल्यांकन के लिए प्रयोग में लगाया जाना चाहिए।
(5) माता-पिता और समुदाय का मार्गदर्शन करें।
(6) बालकों को कार्य उनकी जाति, धर्म, लिंग या बच्चे की सामाजिक स्थिति के हिसाब से नहीं दिया जाना चाहिए।
(7) बालकों को दिये जाने वाले कार्य के आधार पर उनके भविष्य, पेशे या कमाई के साधन तय नहीं किए जाने चाहिएँ।
(8) सभी बालकों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किये जाने चाहिएँ।

कार्य-शिक्षा की महत्ता
(Significance of Work Education)

(1) मानसिक विकास में सहायक।
(2) सामाजिक रूप से वांछनीय मूल्यों का विकास करने में मद्द मिलती है।
(3) बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार करती है।

Scanned by CamScanner

(4) कार्य-शिक्षा विद्यार्थी में आवश्यक जीवन-कौशलों, यथा समस्या-समाधान, निर्णय लेना, सृजनात्मक सोच, समालोचनात्मक सोच, तदानुभूति, प्रभावी संप्रेषण, स्वयं की पहचान जैसे कौशलों का विकास करने में सहायता करती है।

(5) कार्य-शिक्षा जगत से शिक्षा की सम्बद्धता स्थापित करती है।

(6) बालकों में नेतृत्व प्रदान करने के कौशल को विकसित करती है।

(7) बालकों में आत्मविश्वास का विकास होता है।

(8) आत्मनिर्भरता के गुण पनपते हैं।

(9) बालकों में रचनात्मक क्रियाकलापों के प्रति रुझान बढ़ता है।

(10) बालकों में सृजनात्मकता का विकास होता है।

(11) सांस्कृतिक विरासत स्थानीय व राष्ट्रीय दोनों की सहायता करने की क्षमता तथा संरक्षण की भावना को पोषित करती है।

(12) शारीरिक कार्य और श्रम के महत्त्व के प्रति समझ व सम्मान की भावना पैदा होती है।

(13) कार्य-शिक्षा के जरिए बालक सामुदायिक स्वच्छता बनाए रखने के प्रति सचेत व सजग होते हैं।

(14) शारीरिक कार्य और श्रम के महत्त्व के प्रति समझ व सम्मान की भावना पैदा होती है।

कार्य-केन्द्रित शिक्षा में अध्यापक की भूमिका
(Role of Teacher in Work Centered Education)

(1) बच्चों के लिए उत्पाद संबंधी ऐसे कार्य को चुनें, जो बच्चे की सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति का हिस्सा हो। काम का चयन करते समय बच्चे के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखें।

(2) कार्य को करने के लिए सामग्री और संसाधन जुटाएं।

(3) बालकों को उन कार्य-कलापों से अवगत कराएं या उन कार्यों का नमूना करके दिखाएं जो आप उनसे करवाना चाहते हैं। साथ ही, उन्हें यह भी बताएं कि वे इस कार्य को करने से क्या सीखेंगे?

(4) अध्यापक बालकों के साथ उनके कार्यों में शामिल हों।

(5) अध्यापक को कुछ कार्य क्षमताओं की सूची बनानी चाहिए, ताकि वे हर बच्चे के लिए लक्ष्य तय कर सकें। इन गुणों में सामाजिक गुण, शैक्षणिक गुण या भावात्मक गुण शामिल हो सकते हैं।

(6) बालकों का मूल्यांकन उनके 'समूह में काम करने की क्षमता', औजारों का इस्तेमाल करने में उनका विश्वास और 'काम में शामिल होने में उत्साह' के आधार पर करें। मूल्यांकन बच्चे के कामकाज की प्रक्रिया का होना चाहिए न कि कार्य के वारे में किताबी ज्ञान का।

कार्य शिक्षा का प्रबंधन
(Management of Work Education)

स्कूल के सभी अध्यापकों को कक्षा में कार्य को शिक्षा देने वाले उपकरणों के रूप में समझने व प्रयोग करने की जरूरत है। कार्य को स्कूल टाइम-टेबल का एक अहम हिस्सा बनाने के लिए स्कूल टीम का होना जरूरी है, ताकि बुनियादी समस्याओं और मुद्दों को वे समझ सकें।

अध्यापक को भी कार्य-केन्द्रित शिक्षा की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन की जरूरत होती है। नीचे कुछ दिशा-निर्देश दिए गए हैं—

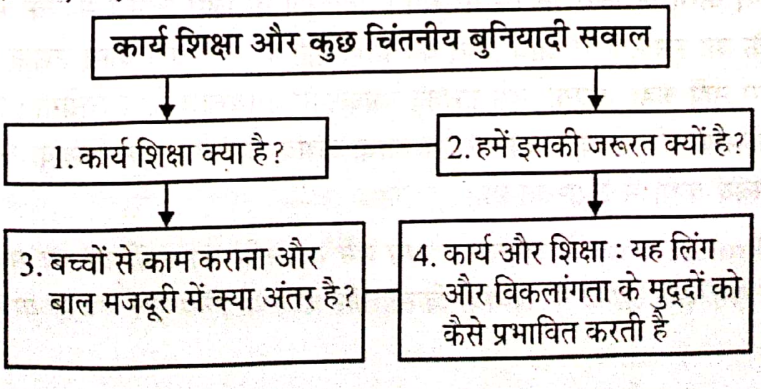

Scanned by CamScanner

कार्य-केन्द्रित कक्षा को चलाने के लिए, अध्यापकों को नीचे दी गई बातों का ध्यान रखने की जरूरत है–

(1) बच्चों के लिए उत्पाद संबंधी ऐसे कार्य को चुनें, जो बच्चे की मानसिक-आर्थिक परिस्थिति का हिस्सा हो। काम का चयन करते समय संसाधनों की उपलब्धता और बच्चे के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखें।

(2) कार्य को करने के लिए सामग्री और संसाधनों को जुटाएँ। सामग्री और संसाधन जुटाने के लिए अध्यापक को समुदाय या दूसरे संस्थानों से मदद की जरूरत पड़ सकती है, जहाँ जरूरी सामग्री या व्यक्ति मौजूद हो सकता है।

(3) बच्चों को उन कार्य-कलापों से अवगत कराएँ या उन कामों का नमूना करके दिखाएँ, जो आप उनसे करवाना चाहते हैं। साथ ही, उन्हें यह भी बताएँ कि वे इस कार्य को करने से क्या सीखेंगे।

(4) बच्चों के साथ उनके कार्यों में शामिल हों। ऐसा न लगे कि अध्यापक सिर्फ उन्हें दिशा-निर्देश देने के लिए हैं या सिर्फ उन्हें पढ़ाने के लिए हैं।

(5) अध्यापक को कुछ कार्य क्षमताओं की सूची बनानी चाहिए, ताकि वे प्रत्येक बच्चे के लिए लक्ष्य तय कर सकें। इन गुणों में सामाजिक गुण, शैक्षणिक गुण या भावात्मक गुण शामिल हो सकते हैं। इन्हें बच्चों के मूल्यांकन के लिए प्रयोग किया जाएगा।

(6) बच्चों का मूल्यांकन उनके 'समूह में काम करने की क्षमता', 'औजारों का प्रयोग करने में उनका विश्वास' और 'काम में शामिल होने में उत्साह' के आधार पर करें। मूल्यांकन बच्चे के कामकाज की प्रक्रिया और उनके रिश्तों का होना चाहिए न कि कार्य के बारे में किताबी ज्ञान का।

श्रम की अवधारणा
(Concept of Labour)

श्रम करना सम्मानीय होता है परन्तु आज पाठ्यक्रम में इसके लिए लगभग कोई जगह है ही नहीं। श्रम करना, भारतीय परिवेश में बालकों के बचपन का हिस्सा रहा है। बच्चे अनेक तरह के घरेलू कार्यों से जुड़ जाते हैं, जैसे खाना पकाना, सफाई करना, बागवानी, खेती, मिट्टी के बरतन बनाना, बढ़ईगिरी के काम, विभिन्न उत्पादों की सिलाई, बुनाई, मछली पालन आदि। स्कूल का कार्यक्रम और माहौल पूरी तरह से पाठ्यपुस्तक केंद्रित होने के कारण श्रम स्कूली पाठ्यक्रम में एक व्यक्तिगत अभिरुचि (हॉबि) तक ही सीमित रह गया है। आज वे स्कूल की शिक्षण-अध्ययन प्रक्रिया में इस तरह के विविध कार्यों के लिए लिए कोई स्थान नहीं है। स्कूल हाथ से किसे जाने वाले श्रम के महत्त्व का अवमूल्यन करता है, जिसके चलते बालकों के मन में श्रम के प्रति उपेक्षा भाव उत्पन्न हो जाता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि श्रम को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाये। तीसरी कक्षा से दसवीं कक्षा के लिए स्कूली समय सारिणी में बालकों के कार्यों को देने की आवश्यकता है ताकि कार्य के प्रति उनकी रुचि बढ़े और उन्हें श्रम के अंतर्निहित शैक्षणिक सामर्थ्य का भी एहसास हो सके।

श्रम : अर्थ एवं परिभाषा
(Labour : Meaning and Definition)

श्रम से सरल अर्थ में तात्पर्य है कि एक कठिन श्रम से किए जाने वाला कार्य। दूसरे शब्दों में श्रम कुछ मौद्रिक पुरस्कारों के लिए किए गए शारीरिक या मानसिक कार्य जो आय प्राप्त करने के लिए नहीं अपितु आनंद या खुशी प्राप्त करने के लिए भी किया जाये। उदाहरण के लिए बगीचे में एक माली के काम को श्रम कहा जाता है क्योंकि वह इसके लिए आय प्राप्त करता है लेकिन अगर वही काम उसके घर के बगीचे में किया जाता है, तो उसे श्रम नहीं कहा जाएगा, उसे उसकी व्यक्तिगत अभिरुचि कहा जायेगा। उदाहरण के लिए स्कूल में पढ़ाने के लिए शिक्षक की योग्यता को घर पर लाना संभव नहीं है। एक शिक्षक का श्रम तभी काम कर सकता है जब वह स्वयं कक्षा में उपस्थित हो।

जेवंस (Prof. Jevons) के अनुसार, *"श्रम मन या शरीर का आंशिक रूप से किया गया कार्य है जो काम से सीधे प्राप्त होने वाले आनंद के अलावा किसी और चीज के लिए पूर्ण रूप से या पूरी तरह से किया गया कार्य है।"*

Scanned by CamScanner

एस० ई० थॉमस (S. E. Thomas) के अनुसार, *"श्रम शरीर या मन के सभी मानवीय प्रयासों को दर्शाता है, जो इनाम की उम्मीद में किये जाते हैं।"*

प्रो० मार्शल (Prof. Marshall) के अनुसार, *"मन या शरीर की किसी भी तरह की थकावट आंशिक रूप से या पूरी तरह काम से प्राप्त खुशी के अलावा कुछ और अच्छी कमाई करने की दृष्टि से पूरी होती है।"*

श्रम का महत्त्व
(Siginificance of Labour)

श्रम बालकों के शैक्षणिक सामर्थ्य में निम्न प्रकार से वृद्धि करता है—

(1) स्कूल के बच्चों को सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं से रू-ब-रू करता है और सीखने का मौका देता है।

(2) स्कूल में मिलने वाली शिक्षा को अर्थपूर्ण एवं बेहतर दिशा मिलती है।

(3) ऐसे उत्पादों को अपने हाथों से बनाने में बालकों को आनंद मिलता है, जिन्हें वे रोजमर्रा इस्तेमाल करते हैं। ऐसा करने से उनके अंदर बसी किसी भी चीज को सीखने की स्वाभाविक उत्सुकता बनी रहती है।

(4) बालकों को नए कामों—मानसिक, सामाजिक और भावात्मक आदि को करने में दक्षता हासिल होती है।

(5) समय की पाबंदी, स्वच्छता, आत्मनियंत्रण, परिश्रमशीलता, कर्त्तव्य बोध, सेवा भावना, उत्तरदायित्व की भावना, उद्यमशीलता, समानता के प्रति संवेदनशीलता, भाईचारे की भावना का विकास विद्यार्थियों के एक साथ मिल-जुलकर कार्य करने से ही होता है।

(6) शिक्षकों को भी नवीन अनुभव प्राप्त होते हैं।

(7) विद्यालय की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक है।

(8) विद्यालय को अभिभावकों तथा समाज से जोड़े रखने में सहायक है।

श्रम को स्कूली पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के दिशा निर्देश

(1) श्रम, शारीरिक रूप से किए गए वे उत्पादक कार्य हैं, जो किसी स्थानीय व्यापार या परम्परा को इंगित करते हैं; जैसे कृषि, मत्स्यपालन, बढ़ईगिरी, सिलाई, कुम्हारगिरी आदि।

(2) बच्चों के कार्य उनकी उम्र पर निर्भर करेंगे।

(3) कार्यों का चयन, उपलब्ध भौतिक संसाधनों पर भी निर्भर करेगा, जिसे शिक्षक, स्कूल के अन्दर से या समुदाय, से एकत्रित कर सकते हैं।

(4) कार्यों का चयन, पाठ्यक्रम से निर्धारित हो, यह आवश्यक नहीं है।

(5) कार्य का चयन का किसी ऐसे पेशे से कोई संबंध नहीं है, जिसे बच्चा अपने माध्यमिक या उच्च-माध्यमिक वर्गों में ले, या अपने भविष्य के जीवन में नौकरी के रूप में ले।

(6) शिक्षक का भी उत्पाद प्रक्रिया में भाग लेना जरूरी है।

(7) बालकों के कार्य उनकी जाति, वर्ग एवं लिंग से निर्धारित नहीं होंगे।

(8) जब भी जरूरत महसूस हो शिक्षक को स्थानीय समुदाय के किसी सदस्य को कक्षा में आकर, किसी विशिष्ट कौशल को सिखाने के लिए बुलाना चाहिए।

(9) सहकर्मी शिक्षा को प्रोत्साहन देना चाहिए।

(10) बालकों को समूह में कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(11) शिक्षक को उन क्षमताओं के बारे में स्पष्ट होना चाहिए, जिसे वह कार्य आधारित कक्षा संचालित करने के दौरान बालकों में उत्पन्न करना चाहते हैं। बालकों में उत्पन्न ये क्षमताएँ, शिक्षक के मूल्यांकन के लिए, मानदण्ड के रूप में कार्य करेंगी।

इस प्रकार जीवन के सभी पहलुओं चाहे वह व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन से संबंधित हो या

Scanned by CamScanner

सामाजिक और व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित हो, में शारीरिक श्रम शामिल है। हमारे दैनिक जीवन के ऐसे कई लक्षण हैं, जिन्हें हम श्रम से अलग नहीं कर सकते। वास्तव में कार्य और मानव जीवन को दो अलग-अलग चीजों के रूप में नहीं देखा जा सकता। मानव जीवन के लिए श्रम बहुत महत्त्वपूर्ण है। कुछ लोगों के लिए जहाँ पर यह आजीविका का साधन है वहीं दूसरों के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का माध्यम है।

कार्य एवं जीविका
(Work and Livelihood)

जीविका का शाब्दिक अर्थ है, एक ऐसा व्यवसाय जिसके द्वारा जीवन में आगे बढ़ने एवं उन्नति के अवसरों का लाभ उठाया जा सके। इससे अभिप्राय मात्र एक रोजगार/जीविका का चयन नहीं है। इसका तात्पर्य उन विभिन्न पदों से है, जो क्रियाशील जीवन में कोई व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। जीविका का चुनाव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। अपनी योग्यता के अनुसार एक विशेष व्यवसाय का चुनाव जो हम अपने भविष्य के लिए करते हैं, उसका आज के प्रतियोगी जीवन में बहुत महत्त्व है। आज जिस वृत्ति का चुनाव करते हैं वही आपके भविष्य की आधारशिला है। पहले, लोग अपनी शिक्षा पूरी करते थे, फिर अपनी जीविका का निर्णय करते थे। लेकिन आज की पीढ़ी अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी करने से पहले ही अपने भविष्य निर्माण की दिशा में कदम बढ़ा लेती है। कार्य हमारे जीवन के कई रूपों को प्रभावित करता है। इस भीषण प्रतियोगिता की दुनिया में प्रारम्भ से ही जीविका सम्बन्धी सही चुनाव अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है, जो किसी व्यक्ति को विभिन्न जीवनवृत्तियों से अवगत कराए। वास्तव में विद्यालय को ज्ञान, कर्म और श्रम का सामंजस्य बिठाने का केन्द्र बनाया जाना चाहिए। ऐसे स्कूल खोले जायें जहाँ बच्चों को किताबी शिक्षा के साथ-साथ बढ़ईगिरी, किसानी, सब्जी उगाना तथा डेयरी आदि विषयों का प्रशिक्षण मिल सके जिसमें बुनियादी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे अपना हुनर विकसित कर सकें। इन कार्यों से जो भी कमाई हो उससे वे लोग अपने लिए पेंसिल, स्लेट, कॉपी खरीद सकें।

नई तालीम, अनुभवजन्य-अधिगम एवं कार्य-शिक्षा इस संबंध में उपयोगी हो सकती है। बच्चों को सिलाई-बुनाई, खेती, बागवानी, बिजली उत्पादन, जल संरक्षण, पाक-कला आदि की शिक्षा दी जाती है। पढ़ाई के साथ बच्चों में हाथ से काम करने के संस्कार डाले जाते हैं, ताकि उन्हें नौकरी के लिए सरकार का मुँह न ताकना पड़े। इससे छात्र गांवों में रहना पसंद करेंगे। लघु उद्योगों की स्थापना से भी गाँव की महिलाओं को रोजगार मिलेगा। नई तालीम शिक्षा को जीविकोपार्जन का माध्यम बना सकती है यदि बालक को रोजगार नहीं भी मिला तो भी वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकता है। इस प्रकार गांधीजी ने भारत को एक बहुमूल्य चीज सौंपी है जो बुनियादी शिक्षा के रूप में नजर आती है। बुनियादी शिक्षा बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण है। इसको देश और दुनिया के लोग बुनियादी शिक्षा और नई तालीम के नाम से जानते हों।

गांधीजी ने कहा था, *"नई तालीम भारत के लिए उनका अंतिम और सर्वश्रेष्ठ योगदान है।"*

कार्य प्रशंसा एवं संतुष्टि
(Work with Happiness and Satisfaction)

कार्य-शिक्षा में बालकों को जो काम दिया जाता है, उसके आधार पर उनके भविष्य, पेशे या कमाई के जरिए तय नहीं किए जाने चाहिएँ। वरन् ऐसे कार्य दिये जायें जो उन्हें प्रशंसा का पात्र बनाकर संतुष्टि प्रदान करें। अध्यापकों को चाहिए कि वे बालकों में कार्य के प्रति उचित दृष्टिकोण विकसित करें। उचित प्रशिक्षण सुविधाओं के समुचित प्रयोग करने में उन्हें सक्षम बनायें। छात्र विशेष की विभिन्नताओं के महत्त्व को समझने में सक्षम बनायें, छात्रों के सर्वोत्कृष्ट विकास और उनकी क्षमता को विकसित करें और उनके लिए उचित कदम उठायें ताकि छात्र के माता-पिता संतुष्ट हो सकें।

आज की शिक्षा प्रणाली कार्यकुशलता के दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को सक्षम बनाने में असमर्थ है। आज के समय में बालकों के पास शैक्षणिक प्रमाण-पत्र तो होता है, लेकिन उनमें कौशल या योग्यता का एकदम अभाव रहता है। वर्तमान समय में स्कूल श्रम से संबंधित गौरव और उससे संबंधित मान्यताओं के प्रति कटिबद्धता को

Scanned by CamScanner

नष्ट कर रहे हैं, इनमें सामाजिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और संबंधपरक कौशलों के अलावा अभिव्यक्ति, संप्रेक्षण, सुनियोजन, नेतृत्व, पहल और उद्यमिता से संबंधित कौशल भी शामिल है। रचनात्मकता, अन्तर्बोध, सामाजिक सहानुभूति, सांस्कृतिक संवेदनशीलता या वैज्ञानिक मनोवृत्ति जैसे गुण पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग नहीं हैं। अतः इस शिक्षा प्रणाली से आये अधिकांश लोगों में आत्मविश्वास की कमी होती है। कार्य-शिक्षा से ज्ञान और कौशल के बीच की मौजूदा खाई पाटने में मदद मिलेगी। अच्छी एवं सफल कार्य-शिक्षा जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते है। कार्य संतुष्टि सिर्फ अध्यापकों के लिए वरन् प्रशासन पर भी अपना प्रभाव डालती है?

कार्य संतुष्टि लोगों के जीवन और कार्य स्थल में उनकी उत्पादकता का महत्त्वपूर्ण पहलू है। कार्य-संतुष्टि जिम्मेदारी, कैरियर के लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा संगठन की उत्पादकता में भागीदारी का परिणाम ज्ञात करने में सहायक है। कार्य संतुष्टि बताती है कि हम कार्य को करने के लिए कितने अग्रसर हैं? एक अन्य शोधकर्ता के अनुसार कार्य-संतुष्टि एक संगठन के अंदर अपने हिस्से के योगदान के प्रदर्शन के माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति के परिणाम से भावनात्मक आनंद की प्राप्ति है। विद्यालय को शिक्षक की कार्य-संतुष्टि पर अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह उनकी संतुष्टि एवं दक्षता को बढ़ावा दे सकती है। किसी भी कार्य की सफलता के लिए सकारात्मक अभिवृत्ति महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ शारीरिक श्रम सुख और आनंद के रास्ते खोलता है वहीं यह संतोष ही है जो लोगों को जिम्मेदार बनाता है। शारीरिक श्रम कार्य तथा संतोष को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा

l e>kt kl drkgS–

किसी विद्यालय में जिसमें ऐसे बहुत सारे बच्चे हैं जिन्हें कभी किसी प्रकार का शारीरिक श्रम करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। जब उन्हें ईंटों के ढेर को साफ करने का कार्य दिया गया तब उनके अभिभावक चिंतित हो गये कि उनके बच्चे बीमार न हो जाएं क्योंकि उन्हें शारीरिक श्रम करने के लिए कहा गया था परंतु बच्चों ने कहा कि उन्हें यह कार्य करके बहुत खुशी हुई। इससे ज्यादा तो वे अपने अन्य कार्यों से थक जाते हैं। उन्हें इस कार्य से संतोष भी प्राप्त हुआ।

●●●

Scanned by CamScanner